

चंपावती स्त्री. (तत्.) दे. चंपापुरी।

चंपू पुं. (तत्.) साहित्य की गद्य-पद्यमय वह आदिकालीन काव्य-शैली जो निरंतर प्रचलित रही है और जिसमें गद्य के बीच-बीच में पद्य भी होता है, वह "चंपू-काव्य" कहलाता है।

चंबल स्त्री. (तद्.) विंध्य पर्वत से निकलने वाली एक नदी जो राजस्थान के कोटा की ओर से निकलकर इटावा (उत्तर प्रदेश) के आस-पास यमुना में मिलती है पु. 1. भीख माँगने का प्याला, कटोरा या खप्पर 2. नहरों के किनारे पर सिंचाई के लिए पानी ऊपर चढ़ाने की लकड़ी का लंबा टुकड़ा 3. चिलम का ऊपरी भाग, सरपोश।

चंबी स्त्री. (देश.) मोमजामे या कागज का एक वह टुकड़ा जो छपाई करते समय कपड़ों पर उन स्थानों पर रखा जाता है जहाँ रंग नहीं चढ़ाना होता है।

चंबू पुं. (देश.) 1. पहाड़ों पर वर्षाधीन भूमि पर उगने वाला धान 2. देवमूर्तियों पर जल चढ़ाने के लिए प्रयुक्त धातु निर्मित छोटे मुँह की कलसी।

चंदवा पुं. (तद्.) 1. सिंहासन या गद्दी के ऊपर चाँदी या सोने के खंभों पर बनाया गया मंडप, चंदोवा 2. मंडप, वितान, गोल आकार की चकती 3. मोर पंख की चंद्रिका 4. एक प्रकार की मछली।

चँदिया स्त्री. (देश.) 1. छोटी रोटी (प्रायः पहली रोटी जो गाय के लिए बनाई जाती थी 2. रोटी का टुकड़ा 3. खोपड़ी या सिर का ऊपरी भाग।

चँवर पुं. (तद्.) सुरा गाय की पूँछ के बालों का गुच्छा जो काठ, सोने या चाँदी की डंडी में लगा रहता है टि. इसे राजाओं, देवमूर्तियों एवं दूल्हे के सिर पर पीछे या बगल से डुलाया जाता है ताकि उनके ऊपर मक्खियाँ आदि न बैठें 2. घोड़े या हाथी के सिर पर लगने वाली कलगी।

चँवरी (चौरी) स्त्री. (तद्.) लकड़ी की बेंत या डंडी में लगा हुआ घोड़े की पूँछ के बालों का गुच्छा जिससे घोड़े के ऊपर की मक्खियों को उड़ाया जाता है।

च पुं. (तत्.) 1. कच्छप या कछुआ 2. चंद्रमा 3. चोर 4. दुर्जन 5. शिव 6. चर्वण या भक्षण वि. 1. बुरा, अधम 3. विशुद्ध 3. बिना बीज का, निर्बीज।

चड़ स्त्री. (अनु.) महावर्तों की बोली का एक शब्द जिसका प्रयोग हाथी को घुमाने के लिए किया जाता है।

चई स्त्री. (देश.) एक पेड़ जिसकी लकड़ी तथा जड़ औषध के काम आती है।

चउहट्ट पुं. (देश.) चौहट्ट, चौराहा।

चक पुं. (तद्.) 1. चकई, चक्रवाक पक्षी (चकवा) 2. 'चक्र' नामक अस्त्र 3. चक्का, पहिया 4. जमीन का एक बड़ा टुकड़ा (पट्टी) वि. भरपूर, ज्यादा, अधिक वि. (देश.) 1. चकपकाया हुआ, भ्रांत 2. भौंचक्का।

चकई स्त्री. (तद्.) मादा चकवा दे. चकवा स्त्री. (देश.) घिरनी या गरारी के आकार का एक छोटा खिलौना जिसके घेरे में डोरी लपेटी रहती है, इसी डोरी के सहारे बच्चे इसे नचाते एवं फिराते हैं।

चकचकाना अ.क्रि. (अनु.) पानी, खून, रस या किसी द्रव का सूक्ष्म कणों के रूप में किसी वस्तु के अंदर से बाहर आना, रिस-रिस कर ऊपर आना, गीला हो जाना, भीगना।

चकचकी स्त्री. (अनु.) करताल नामक बाजा।

चकचाना अ.क्रि. (देश.) चौंधिया जाना, चकाचौंध लगना।

चकचाव पुं. (अनु.) चकाचौंध।

चकचून वि. (तद्.) चूरा किया हुआ, पिसा हुआ, चकनाचूर।

चकचौंधना अ.क्रि. (देश.) अत्यधिक प्रकाश के कारण आँख का न ठहर सकना, आँख का तिलमिलाना, चकाचौंध होना।

चकडोर स्त्री. (देश.) 1. चकई की डोरी 2. चकई नाम के खिलौने में लपेटा जाने वाला सूत या अन्य प्रकार का लंबा धागा 3. जुलाहों के करघे की वह डोरी जो चक या नचनी में लगी हुई नीचे लटकती है और उसमें बेसर बँधी रहती है।